तीव्र पुरुषार्थ - 15

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सदैव एकरस स्थिति रहे और विघ्नों को भी हटा सकें। इसके लिए सदैव दो बातें अपने सामने रखनी हैं।

➳ _ ➳ जैसे एक आंख में मुक्ति दूसरी आंख में जीवनमुक्ति रखते हैं।

➳ _ ➳ वैसे एक तरफ विनाश के नगाड़े सामने रखो और दूसरे तरफ अपने राज्य के नजारे सामने रखो, दोनों ही साथ में वृद्धि में रखो।

➳ _ ➳ विनाश भी, स्थापना भी।

➳ _ ➳ नगाड़े भी नजारे भी।

➳ _ ➳ तब कोई भी विघ्न को सहज पार कर सकेंगी।

(28/05/1970)

➢➢ एकरस अर्थात

➳ _ ➳ STABLE & CONSTANT

➳ _ ➳ हलचल से मुक्त

→ पराजय होने पर भी स्थिति अचल अडोल रहे तभी तो श्रेष्ठ योगी कहलायेंगे

→ राजयोगी साधारण नहीं होते... स्थापना और विनाश उसकी गोद में पलते हैं

➳ _ ➳ एक में, एक से, सारे रस

➳ _ ➳ न मान की कामना, न अपमान का भय

➳ _ ➳ व्यर्थ संकल्पों के दंड से मुक्त

→ ज्ञान चिंतन ही श्रेष्ठ उपाय